14 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कंट्रोलिंग और रूलिंग पावर से कर्मेन्द्रिय जीत सो विश्वराज्य अधिकारी बनने का अनुभव

➢➢ कर्मेन्द्रिय जीत सो विश्वराज्य अधिकारी मैं आत्मा...

➳ _ ➳ साइलेंस धाम निवासी मैं आत्मा...

➳ _ ➳ सेवार्थ ही इस देह और आवाज की दुनियां में आई हूँ...

→ इस पञ्च तत्वों की देह का आधार लिया हैं...

→ पञ्च तत्वों की देह, जिसे प्रकृति कहते हैं...

- ये पांच तत्व...
- पृथ्वी,
- आकाश,
- अग्नि,
- वायु
- और जल तत्व...

→ मन बुद्धि रुपी मंत्री और सेवा का आधार ये मेरी कर्मेन्द्रियाँ..

- दृश्य इन्द्रियाँ- दो आँखे,
- श्रवण इन्द्रियां- दो कान,
- खुशबू और स्वांस के लिए- नासिका
- वाचा और स्वाद इन्द्रियां- मुख और जिह्वा
- सेवा का आधार, ये दो हाथ और पैर...

➳ _ ➳ लक्ष्मी नारायण के चित्र सम्मुख, मैं स्वराज्यधिकारी आत्मा..

➳ _ ➳ अपना राजदरबार राज लगाकर...

→ चेकिंग कर रही हूँ अपनी कंट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर की...

- आँखों से केवल एक ही परम लक्ष्य को निहारते हुए...
- कानों से अनहद नाद सुनते हुए...
- नासिका से आते-जाते प्राणों में...
- पावनता की खुशबूं को महसूस करते हुए...
- जिह्वा से शूबी रस का पान करते हुए..
- मुख में केवल एक बाबा का मुह्लरा डाले हुए...
- कदम पर कदम श्रीमत की पगडंडी पर...
- और हाथों में सद्कर्मों की ऊष्मा महसूस करते हुए...

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस आवाज की दुनिया से धीरे दूर होती जा रही हूँ...

→ दूर... बहुत दूर....

→ जहाँ कोई आवाज नही,

- पूरी तरह साइलेंस वर्ल्ड हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा परमधाम में, निराकार रूप में...

➳ _ ➳ शिवज्योंति बिंदु के ठीक सम्मुख...

→ दूर दूर तक फैला सुनहरा लाल प्रकाश...

→ प्रकाश के इस घेरें में समाती हुई मैं आत्मा...

→ कुछ देर तक इसी एकरस अवस्था में...

→ समाँ रही हूँ, खुद में सारी शक्तियों को

→ प्रकाश की एक तीव्र धारा...

→ किसी तीव्र गति के राकेट की भांति...

→ मुझ आत्मा के संस्कारों के केंद्र को...

→ दिव्य ऊर्जा से भरपूर कर रही हैं...

→ मैं आत्मा सभी प्रकार के व्यर्थ से मुक्त हो रहीं हूँ...

- लाल प्रकाश की धारा...
- मेरे शक्ति क्षेत्र में समाँ रही हैं...
- मेरी कंट्रोलिंग पावर बढती जा रही हैं...
- मेरी रूलिंग पावर बढ़ रही है...
- अधीनता के संस्कार पूरी तरह समाप्त हो...
- अधिकारीपन के संस्कार इमर्ज हो रहें हैं...
- निरंतर बरसता आनंद का झरना...
- मेरी सभी उदासियों को भस्म कर रहा हैं...
- मेरे मन बुद्धि रुपी मंत्री पूर्ण सहयोगी हैं...
- मेरी कर्मेन्द्रियां रुपी कर्मचारी मेरे पूर्ण अधीन हैं...
- मैं कर्मेन्द्रियाँ जीत आत्मा हूँ
- मैं प्रकृति जीत आत्मा हूँ...
- 'मैं स्वराज्यधिकारी सो...
- विश्वराज्य अधिकारी' आत्मा हूँ...